समग्र शिक्षा
Samagra Shiksha
समग्र शिक्षा

Under CSR Support by
ipca | Foundation



कक्षा - 9

हिंदी (आलोक)

अध्याय – 7

अपराजिता

शिवानी (1923 -1979)

भाग – 1

कीर्ति बसुमतारी

समग्र शिक्षा
Samagra Shiksha
समग्र शिक्षा

Under CSR Support by
ipca | Foundation

कवि परिचय

शिवानी (1923 -1979)



जन्म – 17 अक्टूबर 1923,
राजकोट (गुज़रात)

पूरा नाम – गौरापंत शिवानी; साहित्य जगत में 'शिवानी' नाम से प्रसिद्ध।

परिवार – पिता अश्विनी कुमार पाण्डेय राजकुमार कॉलेज के प्राचार्य। माणबदर और रामपुर रियासत के दीवान।

किशोरावस्था – शांतिनिकेतन में बीती।

समग्र शिक्षा
Samagra Shiksha
समग्र शिक्षा

Under CSR Support by
ipca | Foundation

वैवाहिक जीवन – पति की असामयिक मृत्यु के बाद लखनऊ में रहीं; कुछ समय अमेरिका में पुत्र के परिवार के साथ रहीं।

प्रमुख रचनाएँ – पहली रचना नटखट मे प्रकाशित , मैं मुर्गा हूँ (धर्मयुग पत्रिका 1951), सुनहु तात(कहानी), सोने दे (आत्मवृत्तात्मक आख्यान), अतिथि (उपन्यास) आदि।

स्तम्भ लेखन – 'स्वतंत्र भारत' के चर्चित स्तम्भ 'वातायन' की नियमित लेखिका।

पुरस्कार – साहित्य सेवा के लिए भारत सरकार द्वारा 1979 में पद्मश्री से सम्मानित।

निधन – 21 मार्च 2003, दिल्ली।

समग्र शिक्षा
Samagra Shiksha
समग्र शिक्षा

Under CSR Support by
ipca | Foundation

अपराजिता शीर्षक कहानी में शारीरिक रूप से अक्षम एक ऐसी महिला के जीवन पर आलोकपात किया गया है जो जीवन की विषम परिस्थितियों का सामना करती हुई अपराजिता बनी रही। शारीरिक रूप से अक्षम होने के कारण डॉ. चन्द्रा को सामान्य लोगों की तरह काम-काज करने में असुविधा होती थी। परन्तु उनके मन में असीम धैर्य और सुदृढ़ इच्छाशक्ति थी। उन्होंने जीवन में आनेवाली सभी बाधाओं और विकट परिस्थितियों का डटकर मुकाबला किया और उन पर विजय प्राप्त कर

समग्र शिक्षा
Samagra Shiksha
समग्र शिक्षा

Under CSR Support by
ipca | Foundation

ली। विज्ञान के क्षेत्र में डॉ. चन्द्रा ने महत्वपूर्ण अवदान दिया। निरंतर साधना के बल पर वे प्रसिद्धि के शिखर पर पहुँच गईं। डॉ. चन्द्रा की जीवन गाथा केवल शारीरिक अक्षम लोगों के लिए ही प्रेरणा-स्रोत नहीं है, बल्कि उन सभी लोगों के लिए प्रेरणाप्रद है जो अपने लक्ष्य तक पहुँचने से पहले ही निराश होकर मार्ग में आनेवाली बाधाओं के समक्ष पराजय स्वीकार कर लेते हैं।

कभी-कभी अचानक ही विधाता हमें ऐसे विलक्षण व्यक्तित्व से मिला देता है, जिसे देख स्वयं अपने जीवन की रिक्तता बहुत छोटी लगने लगती है। हमें तब लगता है कि भले ही उस अंतर्यामी ने हमें जीवन में कभी अकस्मात अकारण ही दंडित कर दिया हो किन्तु हमारे किसी अंग को हमसे विच्छिन्न कर हमें उससे वंचित तो नहीं किया।

रिक्तता – শূণ্যতা
विच्छिन्न – পৃথক
बुलेटिन – সৃষ্টিকর্তা
अकस्मात – আকস্মিকভাৱে
विलक्षण – অসাধাৰণ
अंतर्यामी – অন্তর্যামী, ঈশ্বৰ

फिर भी हममें से कौन ऐसा मानव है जो अपनी विपत्ति के कठिन क्षणों में विधाता को दोषी नहीं ठहराता। मैंने अभी पिछले ही महीने, एक ऐसी अभिशप्त काया देखी है, जिसे विधाता ने कठोरतम दंड दिया है, किन्तु उसे वह नतमस्तक आनन्दी मुद्रा में झेल रही है, विधाता को कोसकर नहीं।

अभिशप्त- অভিশপ্ত
काया- শৰীৰ
नतमस्तक – বিনম্ৰভাৱে শিৰ নত কৰা, প্ৰণাম কৰা

समग्र शिक्षा
Samagra Shiksha
समग्र शिक्षा

Under CSR Support by
ipca | Foundation

उसकी कोठी का अहाता एकदम हमारे बँगले के अहाते से जुड़ा था। अपनी शानदार कोठी में उसे पहली बार कार से उतरते देखा, तो आश्चर्य से देखती ही रह गई। कार का द्वार खुला, एक प्रौढ़ा ने उतरकर पिछली सीट से एक व्हील चेयर निकाल कर सामने रख दी और भीतर चली गई।

अहाता- চোতাল
प्रौढ़ा- মধ্যবয়সীয়া মহিলা

समग्र शिक्षा
Samagra Shiksha
সমগ্র শিক্ষা

Under CSR Support by
ipca | Foundation



दूसरे ही क्षण, धीरे-धीरे बिना किसी सहारे के, कार से एक युवती ने अपने निर्जीव निचले धड़ को बड़ी दक्षता से नीचे उतारा, फिर बैसाखियों से ही व्हील चेयर तक पहुँच उसमें बैठ गई और बड़ी तटस्थता से उसे स्वयं चलाती कोठी के भीतर चली गई। मैं फिर नित्य नियत समय पर उसका यह विचित्र आवागमन देखती और आश्चर्यचकित रह जाती ठीक जैसे कोई मशीन बटन खटखटाती अपना काम किए चली जा रही हो।

नियत– নির্ধাৰিত

आवागमन– অহা-যোৱা

धीरे-धीरे मेरा उससे परिचय हुआ। कहानी सुनी तो दंग रह गई। नियति के प्रत्येक कठोर आघात को अति अमानवीय धैर्य एवं साहस से झेलती वह बित्ते भर की लड़की मुझे किसी देवांगना से कम नहीं लगी। मैं चाहती हूँ कि मेरी पंक्तियों को उदास आँखों वाला वह गोरा, उजले वस्त्रों से सज्जित

आघात– আঘাত

बित्ते भर की - নগণ্য

देवांगना - দেৱতাৰ দৰে ৰূপবতী মহিলা

समग्र शिक्षा
Samagra Shiksha
समग्र शिक्षा

Under CSR Support by
ipca | Foundation

लखनऊ का मेधावी युवक भी पढ़े, जिसे मैंने कुछ माह पूर्व अपनी बहन के यहाँ देखा था। वह आई.ए.एस. की परीक्षा देने इलाहाबाद गया। लौटते समय किसी स्टेशन पर चाय लेने उतरा कि गाड़ी चल पड़ी। चलती ट्रेन में हाथ के कुल्हड़ सहित चढ़ने के प्रयास में गिरा और पहिए के नीचे हाथ पड़ गया। प्राण तो बच गए, पर दायाँ हाथ चला गया। उसी विच्छिन्न भुजा के साथ-साथ धीरे-धीरे वह मानसिक संतुलन भी खो बैठा। पहले दुख भुलाने के लिए नशे की गोलियाँ खाने लगा और अब नूर मंजिल की शरण गही है।

मेधावी– बुद्धिमन्त, मेधावी प्रयास– चेष्टा
नूर मंजिल – लक्ष्णौৰ मानसिक चिकित्सालय

केवल एक हाथ खोकर ही उसने हथियार डाल दिए। इधर चंद्रा, जिसका निचला धड़ है निष्प्राण मांसपिंड मात्र, सदा उत्फुल्ल है, चेहरे पर विषाद की एक रेखा भी नहीं, बुद्धिदीप्त आँखों में अदम्य उत्साह, प्रतिपल-प्रतिक्षण भरपूर उत्कट जिजीविषा और फिर कैसी-कैसी महत्वाकांक्षाएँ।

उत्फुल्ल – আনন্দিত , विषाद- দুখ, उत्कट – তীব্র
जिजीविषा – জীৱনৰ প্ৰতি আকাংক্ষা

"मैडम, आप लखनऊ जाते ही क्या मुझे ड्रग रिसर्च इंस्टीट्यूट से पूछकर यह बताएँगी कि क्या वहाँ आने पर मेरे विषय माइक्रोबायोलॉजी से संबंधित कुछ सामग्री मिल सकती है ?"

"मैडम आप कह रही थी कि आपके दामाद हवाई के ईस्ट-वेस्ट सेंटर में हैं। क्या आप उन्हें मेरा बायोडाटा भेजकर पूछ सकेंगी कि मुझे वहाँ की कोई फैलोशिप मिल सकता है?"

माइक्रोबायोलॉजी - অণুবীক্ষণিক জীৱৰ অধ্যয়ন কৰা বিজ্ঞানৰ এটা শাখা

समग्र शिक्षा
Samagra Shiksha
সমগ্র শিক্ষা

Under CSR Support by
ipca | Foundation

यहाँ कभी सामान्य-सी हड्डी टूटने पर या पैर में मोच आ जाने पर ही प्राण ऐसे कंठगत हो जाते हैं जैसे विपत्ति का आकाश ही सिर पर टूट पड़ा है। और इधर लड़की है कि पूरा निचला धड़ सुन्न है, फिर भी बोटी-बोटी फड़क रही है। आजकल वह आई.आई.टी. मद्रास में काम कर रही है।

जन्म के अठारहवें महीने में ही जिसकी गरदन के नीचे का पूरा शरीर पोलियो ने निर्जीव कर दिया हो, उसने किस अद्भुत साहस से नियति को अँगूठा दिखा अपनी थीसिस पर डॉक्टरेट ली होगी।

कंठगत - ডিঙিত লাগি ধৰা

"मैडम, मैं चाहती हूँ कि कोई मुझे सामान्य-सा सहारा भी न दे। आप तो देखती हैं, मेरी माँ को मेरी कार चलानी पड़ती है। मैंने इसी से एक ऐसी कार का नक्शा बनाकर दिया है, जिससे मैं अपने पैरों के निर्जीव अस्तित्व को भी सजीव बना दूँगी। यह देखिए, मैंने अपनी प्रयोगशाला में अपना संचालन कैसा सुगम बना लिया है। मैं अपना सारा काम अब स्वयं निबटा लेती हूँ।"

मूल्यांकन



1 लेखिका के अनुसार, मनुष्य कब विधाता को दोषी ठहराता है?

क सुख के क्षणों में

ख धन होने पर

ग विपत्ति के कठिन क्षणों में

मूल्यांकन



2 चंद्रा की सबसे बड़ी शारीरिक समस्या क्या है??

क वह बोल नहीं पाती

ख उसकी दृष्टि कमजोर है

ग उसका निचला धड़ निष्प्राण है